404519

AECHN-23

Reg. No. | | | | | | | | |

II Semester B.B.A./B.H.M./M.T.A./B.B.A (Aviation) B.B.A. all Courses Degree Examination June - 2025

LANGUAGE HINDI

KavyaKusum (Poetry), Patralekhan and Sankshepan

(CBCS Freshers SEP Scheme)

Paper - II

Time : 3 Hours **Maximum Marks : 80**

ADARSH COLLEGE (UG) LIBRARY ACCE No. DATE

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या एक वाक्य में लिखिए। **(10×1=10)**

1) कबीरदास के अनुसार कमोदनीं कहाँ बसती है?
2) मीराबाई किसे अपना प्रियतम मानती है?
3) कवि के अनुसार आज सुहाग भी किसका हो गगा है?
4) नव-युवक-कविता के कवि का नाम लिखिए।
5) गुरू-दक्षिणा के रूप में एकलव्य ने क्या दिया?
6) राधेय किसे कहा गया है?
7) कवि ने किसे गिरि-शिखरों पर गिरते देखा है?
8) कवि के अनुसार कैदी के नसीब में क्या है?
9) वधु बनकर कौन पुलकित हुई है?
10) इस भूमि पर कीर्ति पाने के बाद हमें किससे प्यार करना चाहिए।

II. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। **(2×7=14)**

1) कबीर सतगुरू ना मिल्या, रही अधूरी सीख।
स्वांग जति का पहरी, घरि-घरि मांगै भीख।।

2) मैं तो साँवरे के रँग राची।
साजि सिंगार, बाँधि पग घुँघरू,
लोकलाज साजि नाची।।

3) हल्दीघाटी के शिला-खंड।
ऐ दुर्ग सिंह-गढ के प्रचंड।
राणा, ताना का कर घमंड,
दो जगा आज स्मृतियाँ ज्वलन्त,
वीरों का कैसा हो वसंत?

III. निम्नलिखित दो कविताओं का सार लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (2×15=30)

1) गुरू-दक्षिणा।
2) नव युवक।
3) कैदी और कोकिला।

IV. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए। (1×6=6)

1) कुंती।
2) वीरों का कैसा हो वसंत?

V. राम एण्ड राम ब्रदर्स टैकसटाइल्स (लि.) बैगलूरू में एक सहायक-प्रबन्धक का स्थान रिक्त है। इस पद के लिए अपनी शैक्षिक योग्यता भेजते हुए एक आवेदन पत्र लिखिए। (1×10=10)

(अथवा)

पुस्तक महल - आगरा द्वारा भेजी गई कुछ पुस्तकें रास्ते में क्षतिग्रस्त हो गई हैं। इसकी क्षतिपूर्ति के लिए एक शिकायती पत्र लिखिए।

VI. निम्नलिखित गद्यांश का उचित शीर्षक देते हुए एक तिहाई शब्दों में संक्षेपण कीजिए। (1×10=10)

ताजमहल स्मारक प्रेम की एक अनोखी यादगार के रूप में संसार में प्रसिद्ध है। ताजमहल पर अनेक कवियों ने कविताएँ लिखी हैं। लेकिन सुमित्रानंदन पंत जी द्वारा रचित कविता ताजमहल नितांत भिन्न है। 'ताजमहल' कविता में कवि ने मानव की आंतरिक कुरूपता को उजागर किया है। कवि कहता है कि उसने मृत्यु का ऐसा अमर अपार्थिव पूजन अभी तक नहीं देखा है। पत्थरों से मरण का श्रृंगार हो रहा है लेकिन दूसरी तरफ भूखे नंगे लोग सडकों पर मर रहे हैं। कवि कहता है कि हमें जीवन के प्रति विरक्त नहीं होना चाहिए और आत्मा को अपमानित नहीं करना चाहिए। हमें मरण का वरण करने की आवश्यकता नहीं अपितु हमें जीवन का स्वागत करना चाहिए। कवि व्यंग्य करता है कि शव को तो हम रूप, रंग और आदर दे रहे हैं लेकिन जीवित व्यक्ति को हम दुत्कार रहे हैं। हम वर्षों से मृत आदर्शों के ताज को ढोते आ रहे हैं। हम जीवन के मूल संदेश को भूल गए हैं कि मृतकों के मृतक होते हैं और जीवितों के ईश्वर। हमें मृतकों की अपेक्षा जीवित लोगों को रूप रंग और आदर से सम्मानित करना चाहिए।